Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 2268–2270

THE ROLE OF INFORMATION AND COMMUNICATION MEANS IN THE TECHNICAL EMPOWERMENT OF HINDI

हिंदी के तकनीकी सशक्तिकरण में सूचना एवं संचार साधनों की भूमिका

Seema [1]

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5458

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: The amalgamation of digital tools, the Internet and advanced communication platforms has not only facilitated the spread of Hindi but also contributed to its evolution, making it more dynamic, accessible and relevant in the contemporary world. This study explores the multifaceted ways in which information and communication technology has played a significant role in shaping the evolution of the Hindi language, encompassing linguistic, educational, cultural and social dimensions.

Hindi: डिजिटल साधन, इंटरनेट और उन्नत संचार मंचों के समामेलन ने न केवल हिंदी के प्रसार को सुविधाजनक बनाया है, बल्कि इसके विकास में भी योगदान दिया है, जिससे यह समकालीन दुनिया में अधिक गतिशील, सुलभ और प्रासंगिक बन गई है। यह अध्ययन उन बहुआयामी तरीकों की पड़ताल करता है जिसमें सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने भाषाई, शैक्षिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों को शामिल करते हुए हिंदी भाषा के विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

1. प्रस्तावना

डिजिटल साधन, इंटरनेट और उन्नत संचार मंचों के समामेलन ने न केवल हिंदी के प्रसार को सुविधाजनक बनाया है, बल्कि इसके विकास में भी योगदान दिया है, जिससे यह समकालीन दुनिया में अधिक गतिशील, सुलभ और प्रासंगिक बन गई है। यह अध्ययन उन बहुआयामी तरीकों की पड़ताल करता है जिसमें सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने भाषाई, शैक्षिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों को शामिल करते हुए हिंदी भाषा के विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पिछले कुछ दशकों में, डिजिटल प्रौद्योगिकियों के आगमन ने संचार में क्रांति ला दी है, भाषाई बाधाओं को तोड़ दिया है और विचारों के वैश्विक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है। भारतीय संदर्भ में, इंटरनेट और सोशल मीडिया मंचों के उदय ने हिंदी सामग्री की अभिव्यक्ति और प्रसार के लिए एक डिजिटल साधन प्रदान किया है। ब्लॉग, वेबसाइट और सोशल नेटवर्किंग साइटें हिंदी भाषियों के लिए भाषाई पहचान और गौरव की भावना को बढ़ावा देने, अपनी मूल भाषा में जुड़ने, जानकारी साझा करने और खुद को अभिव्यक्त करने के शक्तिशाली उपकरण बन गए हैं।

इसके अलावा, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने सीखने के संसाधनों को अधिक सुलभ और परस्परसंवादी बनाकर शिक्षा में क्रांति ला दी है। ई-लर्निंग मंच, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और शैक्षिक ऐप्स ने भौगोलिक बाधाओं को पार करते हुए हिंदी भाषा शिक्षा के प्रसार को सुविधाजनक बनाया है। इसने न केवल हिंदी भाषी समुदायों को सशक्त बनाया है, बल्कि विविध भाषाई पृष्ठभूमि के शिक्षार्थियों को भी आकर्षित किया है, जिससे ज्ञान और संस्कृति की भाषा के रूप में हिंदी की वैश्विक मान्यता में योगदान हुआ है।

इसके अलावा, भाषा प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों के विकास ने अनुवाद सेवाओं, पाठ-से-वाक् अनुप्रयोगों और वाक् पहचान सहित हिंदी के लिए भाषाई उपकरणों की दक्षता में वृद्धि की है। ये प्रगति न केवल डिजिटल सामग्री को हिंदी भाषियों के लिए अधिक सुलभ बनाती है, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए भाषा को संरक्षित और प्रलेखित करने में भी सहायता करती है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा के बीच सहजीवी संबंध ने भाषाई विकास के एक नए युग की शुरुआत की है। सोशल मीडिया के डिजिटल स्थानों से लेकर ऑनलाइन शिक्षा के आभासी कक्षाओं तक, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने हिंदी के संवर्धन, संरक्षण और वैश्विक प्रासंगिकता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह अनुसंधान डिजिटल युग में हिंदी की परिवर्तनकारी यात्रा पर प्रकाश डालते हुए, इस गतिशील रिश्ते के विशिष्ट पहलुओं पर गहराई से प्रकाश डालेगा।

2. समस्या का कथन

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक समृद्धि का भंडार, हिंदी भाषा, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के व्यापक प्रभाव से चिह्नित डिजिटल युग में एक गतिशील परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। जबकि भाषा लगातार विकसित हो रही है और अनुकूलन कर रही है, इस तेजी से बदलते परिदृश्य में इसके सामने आने वाली विशिष्ट चुनौतियों की जांच करना आवश्यक है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझने की महत्वपूर्ण आवश्यकता को संबोधित करना है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी हिंदी भाषा के विकास, अनुकूलन और संरक्षण में कैसे योगदान देता है।

समस्या का पहला पहलू हिंदी भाषा के विकास की वर्तमान स्थिति में मौजूदा अंतरालों या चुनौतियों को पहचानने और समझने के इर्द-गिर्द घूमता है। तेजी से शहरीकरण, वैश्वीकरण और बदलते संचार संरचना ने भाषाई बदलाव और विविधताओं को जन्म दिया है। यह अध्ययन भाषाई विविधता के संभावित क्षरण, अंग्रेजी भाषा के प्रभुत्व के प्रभाव और पारंपरिक बोलियों के लिए खतरे जैसी विशिष्ट चुनौतियों को इंगित करने का प्रयास करता है। इसके अतिरिक्त, इसका उद्देश्य हिंदी में डिजिटल सामग्री की पहुंच और गुणवत्ता से संबंधित मुद्दों का पता लगाना है।

समस्या के दूसरे पहलू के रूप में, यह अध्ययन यह पता लगाने की आवश्यकता को संबोधित करता है कि हिंदी भाषा के विकास में पहचानी गई चुनौतियों को कम करने में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ, भाषा संरक्षण, शिक्षा और सांस्कृतिक प्रसार में नवाचार का अभूतपूर्व अवसर है। हालाँकि, यह समझना जरूरी है कि क्या सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के वर्तमान अनुप्रयोग पहचानी गई चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान कर रहे हैं या क्या कमियाँ हैं और सुधार के क्षेत्र हैं।

इन परस्पर जुड़े मुद्दों की जांच करके, यह अध्ययन सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा के बीच जटिल संबंधों की सूक्ष्म समझ में योगदान देना चाहता है। इसका उद्देश्य ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करना है जो लगातार विकसित हो रहे डिजिटल परिदृश्य में हिंदी की निरंतर जीवंतता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए भाषाई नीतियों, शैक्षिक रणनीतियों और तकनीकी हस्तक्षेपों को सूचित कर सके। इन चुनौतियों और उन्हें संबोधित करने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की क्षमता की केंद्रित खोज के माध्यम से, यह अध्ययन समकालीन दुनिया में हिंदी भाषा के विकास के लिए अधिक जानकारीपूर्ण और प्रभावी दृष्टिकोण का मार्ग प्रशस्त करने की आकांक्षा रखता है।

3. अध्ययन का उद्देश्य

यह शोध कई प्रमुख उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहता है:

१) हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक विकास एवं उसकी वर्तमान स्थिति का विश्लेषण

4. अध्ययन का औचित्य

"हिन्दी भाषा के विकास में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का योगदान" विषय पर यह अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। अपनी गहरी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ों के साथ हिंदी, भारत की भाषाई विरासत का एक अभिन्न अंग है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का तेजी से एकीकरण बदलते संचार प्रतिमानों के सामने इस विरासत के संरक्षण के बारे में सवाल उठाता है। भाषाई विविधता को संरक्षित करने और पीढ़ी दर पीढ़ी सांस्कृतिक बारीकियों के प्रसारण को सुनिश्चित करने के लिए हिंदी भाषा पर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव को समझना महत्वपूर्ण है।

जैसे-जैसे दुनिया तेजी से एक-दूसरे से जुड़ती जा रही है, हिंदी सहित भाषाओं की वैश्विक प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी भाषाई वैश्वीकरण के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में कार्य करता है, जो हिंदी को भौगोलिक सीमाओं को पार करने की अनुमति देता है। हिंदी के विकास में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के योगदान का अध्ययन करने से यह जानकारी मिलती है कि भाषा कैसे अपनी वैश्विक प्रासंगिकता बनाए रख सकती है और डिजिटल युग में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकती है।

भाषा शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, और हिंदी का अध्ययन कोई अपवाद नहीं है। शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के एकीकरण ने सीखने की पद्धतियों को बदल दिया है, जिससे वे अधिक परस्परसंवादी और सुलभ हो गई हैं। हिंदी के विकास में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की

भूमिका की खोज भाषा शिक्षा, ऑनलाइन संसाधनों और ई-लर्निंग मंचों पर इसके प्रभाव पर प्रकाश डालती है, जो शिक्षकों, नीति निर्माताओं और शिक्षार्थियों के लिए समान रूप से आवश्यक है।

आधार ग्रंथ

डॉ दीपक राम दुबे_ "हिंदी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी" (अभिषेक प्रकाशन दिल्ली, 2018)
संदीप नागवंशी_"बेसिक का कंप्यूटर एंड इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी" (कैलाश पुस्तक सदन भोपाल,2019)
मनीष माथुर, मोहित माथुर_"कंप्यूटर फंडामेंटल एवं सूचना प्रौद्योगिकी" (अमित पब्लिकेशंस, 2022)
डॉ राजीव मालवीय_"शैक्षिक तकनीकी एवं सूचना संप्रेषण तकनीकी" (शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, 2024)
डॉ सुनील कुमार लवटे_"हिंदी वेब साहित्य" (राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2013)
डॉ मनीष कुमार मिश्रा संपादक "वेब मीडिया का वैश्विक परिदृश्य"(हिंदी युग्म प्रकाशन नई दिल्ली, 2013)
प्रो.हरिमोहन _"सूचना प्रौद्योगिकी: रूप और स्वरूप"(भाषा _अंक _मई जून 2002)
राम प्रकाश द्विवेदी "इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सिनेमा" (प्रासंगिक पब्लिशर्स नई दिल्ली, 2017)
डॉ. तुकाराम दौड़_"कंप्यूटर संचार और हिंदी"(राजभाषा भारती अंक _33 अप्रैल जून 2010)
दिल्ली विश्वविद्यालय_ "सूचना प्रौद्योगिकी" (यूनिवर्सिटी प्रेस हैदराबाद, 2012)
नीति मेहता, कमल भाटिया_"इंटरनेट विज्ञान" (इंडिया बुक इंडस्ट्री दिल्ली)
कु. शिप्रा_"जनसंचार एवं पत्रकारिता" (ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली)
संपादक डॉ मधु खराटे_"मीडिया और हिंदी" (विद्या प्रकाशन कानपुर, 2014)
ले. डॉ. मनीष गोहिल _"मीडिया और हिंदी भाषा का स्वरूप" (साधना प्रकाशन कानपुर)
ले. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत_"जनसंचार एवं पत्रकारिता कल और आज" (रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशक एवं विक्रेता कानपुर)
जोशी शालिनी_"वेब पत्रकारिता नया मीडिया नए रुझान" (राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली,2012)
अनुराधा आर._" न्यू मीडिया इंटरनेट की भाषाई चुनौतियां" (राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2012)
जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी_"हिंदी पत्रकारिता का इतिहास" (प्रभात प्रकाशन पटना, बिहार 2017)
डॉ अर्जुन तिवारी_"जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता" (जय भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2004)
उत्पल चक्रवर्ती, रोहित शर्मा _"आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सर्वजन हिताय: सर्वजन सुखाय: बीपीबी पब्लिकेशन,2020)
डॉ.बसंती लाल बाबेल,डॉ गोविंद सिंह राजपुरोहित "सूचना प्रौद्योगिकी एवं साइबर अपराध" (यूनिवर्सिटी बुक हाउस,2022)
संतोष कुमार_"कंप्यूटर एवं सूचना तकनीकी" (आईटीआई रुड़की, 2018)
संतोष कुमार_"पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान" (आईटीआई रुड़की, 2018)
यतींद्र नाथ चतुर्वेदी_ राजभाषा सेनानी हिंदी लेखक: हिन्दी लेखकों का संपूर्ण जीवन परिचय (अक्षर प्लांट चतुर्थ तल 2017)
डॉ. सुधेश _हिन्दी की दशा और दिशा (जनवाणी प्रकाशन दिल्ली 2017)